"आनंद"

"अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरु मै पाईआ । सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वधाईआ । राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ । सवदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ । कहे नानकु आनंदु होआ सतिगुरु मै पाइआ । ऐ मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले । हरि नालि रहु तू मन मेरे दूख सभि विसारणा । अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा । सभना गला समरथु

सुआमी सो किउ मनहु विसारे । कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले । साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै । घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए । सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए । नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे । कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै । साचा नामु मेरा आधारो । साचुनामु आधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआं । करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ । सदा कुरबाणु कीता गुरु विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ । कहै नानकु सुणह संतहु सबदि धरहु पिआरो । साचा नाम मेरा आधारो । वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै । घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि घारीआ । पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ । धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे । कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे । साची लिवै बिनु देह निमाणी । देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ । तुधु बाझु समरथ कोई नाही कृपा करि बनवारीआ । एस नउ होरु थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ । कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ । आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरु ते जाणिआ । जाणिआ आनंदु सदा गुर ते कृपा करे पिआरिआ । करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ । अंदरहु जिनका

मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ । कहै नानकु एह आनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ । बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै । पावै त सो जनु देहि जिसनो होरि किआ करहि वेचारिआ । डकि भरमि भूले फिरहि दहदिसि डकि नामि लागि सवारिआ । गुरपरसादी मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए । कहै नानकु जिस देहि पिआरे सोई जनु पावए ।"

(3-916)

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

रिकार्डिंग किसी कारण वश हो नहीं पाई।